

खुरासानी इमली बीज एवं रोपणी तकनीक

(एडनसोनिया डिजिटल)



पॉलीथिन का माप

पौध रोपण हेतु पॉलीथिन का माप 15x25 सेमी. होना चाहिए।

उपयोग

लकड़ी जलाऊ लकड़ी के रूप में एवं फल औषधीय में उपयोग किए जाते हैं। छाल को उबालकर इसका छिड़काव कर चींटी को भगाया जाता है। पेट से संबंधित बीमारी जैसे गुर्दे, मूत्राशय के रोग, अस्थमा, सामान्य थकान, दस्त, कीड़े के काटने आदि के इलाज के लिये उपयोग किया जाता है। पत्ती और फूल का उपयोग सांस की समस्याओं, पाचन विकार और आँखों की सूजन के लिये उपयोगी है। बीज का उपयोग दाँत एवं मसूड़ों की बीमारी को ठीक करने के लिये किया जाता है। छाल को उबालकर पीने से सर्दी, बुखार और इन्फ्लूएंजा को ठीक किया जाता है। गैस्ट्रिक, गुर्दे और जोड़ों के रोग को ठीक करने के लिये बीजों का उपयोग किया जाता है।

संपर्क :

डॉ. अर्चना शर्मा

वरि. वैज्ञानिक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

फोन: (0761) 2666529, 2665540

Amrit Offset # 0761-2413943

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम

महीन छनी हुई रेत का उपयोग अंकुरण हेतु किया जाना चाहिए।

बुआई का समय

बुआई का उपयुक्त समय सितम्बर से अक्टूबर माह होता है।

100 पौधे हेतु आवश्यक बीजों की मात्रा

100 पौधे तैयार करने हेतु 100 से 200 ग्राम बीजों की आवश्यकता होगी।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि

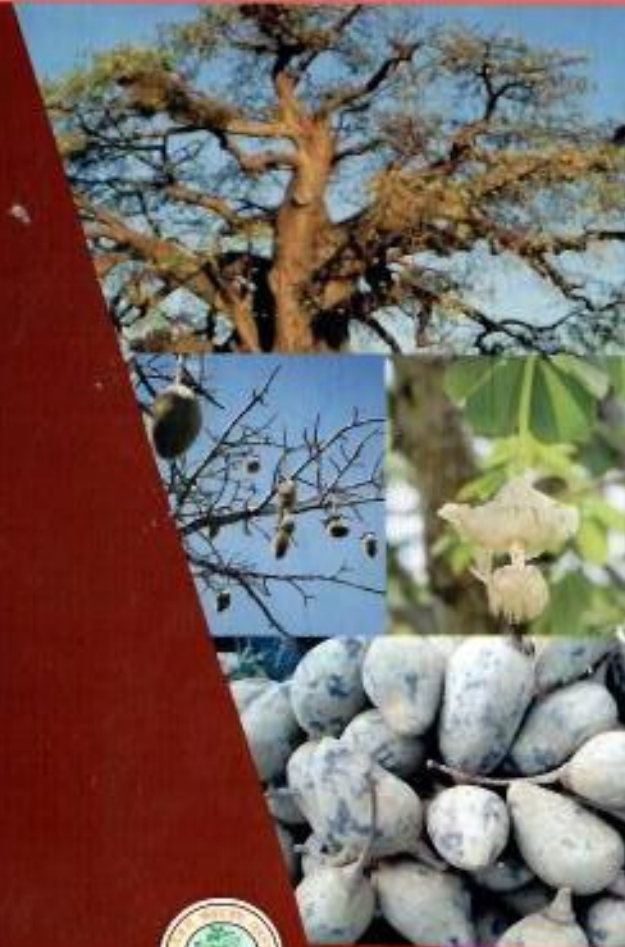
सीधे बीज की बुआई जर्मिनेशन ट्रे अथवा क्यारी में 5 से 8 सेमी. रेत की परत बिछाकर उपरोक्त दर्शित उपचारण पश्चात् बुआई करने पर सामान्य अंकुरण से 20 प्रतिशत अधिक अंकुरण प्राप्त होता है।

रोपणी अवस्था में बीमारी एवं बचाव

प्रारंभ में पौधे अधिक कोमल होने के कारण उन्हें तेज धूप एवं गर्म हवा से बचाना आवश्यक होता है एवं किसी भी तरह की बीमारी दिखने पर फफूंदनाशक बैविस्टीन एवं कीटनाशक दवा एन्डोसल्फॉन का 01 प्रतिशत सांद्रता के घोल का छिड़काव समय समय पर किया जाना अत्यंत आवश्यक होता है।

पॉटिंग मिश्रण

पौध की अच्छी वृद्धि के लिए मृदा एवं 40 ग्राम पी. एस. बी. (PSB) को लेकर पॉलीथिन में मिश्रण बनाकर रोपणी में पौध रोपण के समय उपयोग किया जाना उपयुक्त होता है।



बीज प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) 482008

www.mpsfri.org

खुरासानी इमली - बीज एवं रोपणी तकनीक

प्रजाति का नाम- खुरासानी इमली
वैज्ञानिक नाम- एडनसोनिया डिजिटटा



परिचय

यह मालवेशी कुल का वृक्ष है।

पहचान

यह एक बड़ा गोल कैनोफाइड वृक्ष है, जिसकी ऊँचाई 10 से 25 मीटर की होती है। इस वृक्ष की गोलाई 3 से 10 मीटर तक होती है। इस वृक्ष की छाल नरम, चिकनी, रेशेदार, लाल भूरे रंग की पत्ती वाली शाखाओं वाली होती है। इस पेड़ पर पत्ते साल में 6 महीने के लिये ही लगते हैं, जबकि शुष्क मौसम में इसके पत्ते झड़ जाते हैं। इसके फल कठोर, पीले भूरे रंग के मखमली बालों के समान होते हैं।

प्राप्ति स्थान

यह विदेशी प्रजाति है। यह अफ्रीका में सबसे अधिक फैला हुआ है और उप-सहारा अफ्रीका के गर्म, सूखे सवाना में पाया जाता है। यह पश्चिमी एशिया के अरब प्रायद्वीप में ओमान और यमन के क्षेत्र में पाया जाता है। यह वृक्ष भारत में विशेषकर

देश के शुष्क क्षेत्रों में पाया जाता है। मध्य प्रदेश में यह धार जिले के माण्डू में पाया जाता है।

स्थानीय कारक (Locality Factor)

यह ज्यादातर लेटेराइट, रेतीली मृदा में पाया जाता है।

बीज चक्र

बीज उत्पादन प्रतिवर्ष होता है, परंतु एक वर्ष के अंतराल पर बीज का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है।

ऋतुजैविकी (Phenology)

वृक्ष में अक्टूबर से दिसम्बर के मध्य फूल आते हैं। वृक्ष में फल अप्रैल से जून माह में पककर तैयार होते हैं।



प्रतिकिलो बीजों की संख्या

प्रतिकिलो बीज संख्या 1700 से 1900 तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि



सामान्य भण्डारण में बीज की जीवन क्षमता अवधि 03 से 09 माह तक होती है।

सुसुप्तावस्था

बीज में लगभग तीन माह की सुसुप्तावस्था पायी जाती है।

अंकुरण क्षमता

अनुपचारित बीज में अंकुरण क्षमता 50 से 60 प्रतिशत तक पायी जाती है।

पौध प्रतिशत

पौध प्रतिशतता 40 से 50 प्रतिशत तक होती है।

उपयुक्त भंडारण विधि

सील्ड प्लास्टिक जार में कम तापमान (4°C) पर भण्डारित करने पर बीज की जीवन क्षमता अवधि 12 से 15 माह तक बनी रहती है।

उपयोगिता की अवधि

बीज संग्रहण के पश्चात् 03 माह से 01 वर्ष के अंदर उपयोग में लिया जाना चाहिए।

बुवाई पूर्व उपचारण

बुवाई के पूर्व 10% सांद्रता के सल्फ्यूरिक अम्ल के साथ 10 मिनट तक उपचारित करने पर बीज में अंकुरण प्रतिशत 65 से 75% तक प्राप्त होता है।

